# वट सावित्री व्रत कथा (Vat Savitri Vrat Katha)

कथा के अनुसार, मद्र देश के राजा अश्वपति की कोई संतान नहीं थी। उन्होंने संतान प्राप्ति के लिए यज्ञ किया और उनकी एक पुत्री हुई, जिसका नाम सावित्री रखा गया। जब सावित्री विवाह योग्य हुई तो उसने स्वयं सालव देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान को अपना पति चुना। हालांकि सत्यवान गरीब था और उसके माता-पिता अंधे थे, लेकिन सावित्री सत्यवान से ही प्रेम करती थी। देवर्षि नारद ने राजा अश्वपति को बताया कि आपकी पुत्री जिस व्यक्ति से विवाह करना चाहती है वह अल्पायु है, और विवाह के एक वर्ष बाद ही उसकी मृत्यु हो जाएगी। लेकिन सावित्री अपने निर्णय पर अडिग रही और सत्यवान से विवाह कर लिया। सावित्री सास-ससुर और पति की सेवा में लगी रही। सत्यवान की मृत्यु के दिन सावित्री उसके साथ वन में गई। जब यमराज सत्यवान की आत्मा लेकर जाने लगे, तो सावित्री भी उनके पीछे चलने लगी। सावित्री की पति-भक्ति से प्रसन्न होकर यमराज ने उसे तीन वर दिए। सावित्री ने अपने सास-ससुर को दृष्टि और खोया हुआ राज्य वापस दिलाने तथा सौ पुत्रों की मां बनने का वर मांगा।

यमराज (Yamraj) ने सावित्री (Savitri) के सभी वर पूरे किए और सत्यवान को जीवनदान दे दिया। सावित्री के साथ सत्यवान घर लौटा और उन्होंने खुशहाल जीवन बिताया। इस प्रकार सावित्री ने अपनी अटूट पति-भक्ति से यमराज को भी परास्त कर दिया। वट सावित्री व्रत हिंदू महिलाओं द्वारा ज्येष्ठ मास की अमावस्या को किया जाता है। इस दिन महिलाएं निर्जला व्रत रखती हैं, वट वृक्ष की पूजा करती हैं और सावित्री व्रत कथा सुनती हैं। इस व्रत को करने से पति की लंबी आयु और दांपत्य जीवन में सुख-शांति की प्राप्ति का विश्वास किया जाता है।

www.janbhakti.in

Janbhakti.in